Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-12, Issue-1, June-2018

महिला एवं पुरूष शिक्षकों का उत्तरदायित्व एक अध्ययन

प्रो. राधारानी सक्सेना
(से.नि. प्राचार्य, शिक्षा संकाय, सुरेश ज्ञान विहार विश्वविद्यालय)

भावना पाराशर
(असि. प्रो. श्री भवानी निकेतन शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, जयपुर)

वर्तमान में शिक्षकों की उत्तरदायिता का क्षेत्र अत्यंता विस्तृत हो गया है। आज शिक्षकों की उत्तरदायिता शिक्षकों के कार्य मूल्यांकन से संबंधित हो गई हैं, अतः शिक्षा व्यवस्था की सफलता या असफलता का काफी कुछ दायित्व शिक्षकों पर निर्भर करता है। दक्षता, व्यावसायिकता तथा निष्ठा की माँगे शिक्षकों पर एक बहुत अहम दायित्व सौंपती है।

विद्या नाम नास्य रूपमधिंक प्रच्छन्गुप्तधन

विद्या योग करीयराः सुखकारी विद्यागुरूवां गुरूः।।

अर्थात् विद्या मनुष्य की विषेश अभिव्यक्ति हैं। विद्या वह धन है जिसे बिना हानि एवं भय के सुरक्षित रखा जा सकता है। शिक्षा से भौतिक आंनद सुख और ख्याति प्राप्त होती है। शिक्षा गुरूओं की गुरू है और परमात्मा का अवतार है।

यह निर्विवाद सत्य है कि विद्यालय ही भाषी राष्ट्र के निर्माण स्थल हैं, जहाँ राष्ट्र की भावी पीढी को जीवन के सभी क्षेत्रों में संघर्षरत रहकर कार्य करने की शिक्षा दी जाती है। शिक्षा का प्रथम और शाश्वत धर्म ऐसी मानव संतति का सृजन करना है जो जिसमें ग्रहण करने की तत्परता के साथ ही भविष्योन्मुख भी हो। शिक्षक का दायित्व है कि वह बालक को इस योग्य बनाए कि वह सत–असत् की पहचान कर सकें। उसी प्रकार ज्ञान रहित तथा गुणहीन बालक अध्यापक के हाथ से ज्ञानवान हीरा बनकर चमकने लगता हैं।

शिक्षा प्रक्रिया का चाहे कोई भी स्तर एक शिक्षक की भूमिका प्रत्येक स्तर पर महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा प्रक्रिया के प्रत्येक स्तर पर अध्यापकों की भूमिका 'तमसों मा ज्योतिर्गमय'' का उद्देश्य पूरा करने में महत्वपूर्ण होती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात शिक्षा में सम्पूर्ण सुधार की आवश्यकता अनुभव होने के साथ ही शिक्षक उत्तरदायिता का महत्व बढ़ने लगा।

वर्तमान में शिक्षकों की उत्तरदायिता का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। वस्तुतः शिक्षकों की उत्तरदायिता शिक्षकों के कार्य मूल्यांकन से संबंधित होती है। शिक्षा या

गुरू शब्द स्वयं में उत्तरदायित्व या जवाबदेही को परिभाषित करता है। नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत ''अध्यापकों की उत्तरदयिता'' से तात्पर्य विद्यालय की शैक्षिक तथा सहशैक्षिक गतिविधियों का पूर्ण जिम्मेदारी से निर्वहन करने की इच्छा शक्ति है। शिक्षक के उत्तरदायित्व किसी निश्चित सीमा तक आबद्व नही किए जा सकते। एक आदर्ष शिक्षक का उत्तरदायित्व तो यह है कि वह स्वयं अध्ययन कर अपना ज्ञान अद्यतन रखे एवं स्वयं से संदर्भित शैक्षिक गतिविधि का मूल्यांकन करें।

यद्यपि यह भी देखने में आया है कि शिक्षक अपनी उत्तरदायिता के अनुरूप कार्य करने का प्रयत्न करते है परंतु वास्तविकता के धरातल पर कार्य करते समय अनेक ऐसे नकारात्मक पहलू समाने आ जाते हैं, जिससे शिक्षकों का मनोबल कमजोर होने लगता है। एक शिक्षक प्रत्यक्षतः अपनी संस्था के प्रति तथा अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों एवं समाज के प्रति उत्तरदायी होता है। यह एक प्रकार से नई अपेक्षा (New demand) मानी गई है। नवीन इस रूप में कि अतीत एवं वर्तमान समय की शैक्षिक परिणामों की अवधारणा में अंतर आया है। डॉ. जाकिर हुसैन के शब्दों में ''विद्यालयों के लक्ष्य तभी पूर्ण हो सकेंगें, जब विद्यालयों के कार्यो के प्रति उसके कर्मचारियों की उत्तरदायिता पर विशेष बल दिया जाएगा।''

आज शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता चला जा रहा है, जिसके लिए वर्तमान समय में शिक्षक को आरोपों के कट घरें में खडाा कर दिया जाता है। शिक्षक की प्रतिबद्वता पर प्रश्नचिन्ह लगाए जाने लगे है। क्या वास्तव में शिक्षक छात्र, समाज, संस्था एवं राष्ट्र के प्रति संवेदनहीन हो गया हैं? क्या वास्तव में वह अपनी प्रतिबद्धता खो बैंठा हैं? यदि वास्तव में ऐसा है तो वे कौनसी परिस्थितियां है जो इसके लिए उत्तरदायी है? यह एक विचारणीय प्रष्न है। आज शिक्षा पर व्यय इतना अधिक बढ़ गया है कि इसके बदले में अभिभावक ठोस परिणाम की अपेक्षा करते हैं, अतः यह आवश्यक है कि वांछित परिणाम नही देने वाले शिक्षकों की उत्तरदायिता निर्धारित की जाए। किसी भी कार्य की गुणवत्ता बहुत कुछ उत्तरदायिता में शिक्षण कार्य भी प्रवृत्ति भी ऐच्छिक हो जाती है। किसी भी विद्यालय का भवन, पाठ्यक्रम तथा पर्यावरण कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, जब तक शिक्षक कर्तव्यनिष्ठ तथा उत्तरदायी नही होगें, विद्यालय की उन्नति तथा शिक्षण स्तर ऊपर नही उठ सकता।

मानव विकास के विभिन्न आयामों के समक्ष शिक्षा के तीन स्तर निर्धारित किए गए है– प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा तथा उच्च शिक्षा। इनमें से उच्च माध्यमिक शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था के वृक्ष के तने के रूप में स्वीकार किया गया है। अतः आवश्यक है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर उत्तरदयिता का अध्ययन किया जाए। यद्यपि शिक्षकों से संबंधित अनेक अध्ययन हुए हैं किंतु शोधकर्त्री द्वारा

चयनित समस्या पर न्यून अध्ययन ही दृष्टिगत हुए है, अतः निम्न समस्या का चयन किया गया।

समस्या कथन :–

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पुरूष एवं महिला शिक्षकों का उत्तरदायित्वः एक समीक्षात्मक अध्ययन''।

शोध के उद्देश्य :–

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की उत्तरदायिता का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं :–

सम्प्रत्यात्मक परिकल्पना :–

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के उत्तरदायित्व में अंतर नही होता हैं।

संक्रियात्मक परिकल्पना :–

अ. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययपनरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के विद्यार्थियों के प्रति उत्तरदायिता में अंतर नही होता है।

ब. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के अभिभावकों के प्रति उत्तरदायिता में अंतर नही होता है।

स. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के विद्यालय के प्रति उत्तरदायिता में अंतर नही होता है।

द. उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के समाज के प्रति उत्तरदायिता में अंतर नही होता है।

समप्रत्ययों की व्याख्या :–

अ. राजकीय विद्यालय :– वे विद्यालय जिनका संचालन केन्द्र या राज्य सरकार द्वारा किया जाता है तथा इन विद्यालयों के नियम तथा प्रबंध राजकीय होते है।

ब. निजी विद्यालय :– जिन विद्यालयों हेतु सरकार का कार्य मात्र मान्यता एवं अनुदान देने तक ही सीमित होता है तथा जिनका संचालन किसी व्यक्ति विशेष, संस्था, वर्ग अथवा सम्प्रदाय द्वारा होता है।

स. उत्तरदायिता :– उत्तरदायिता किसी कार्यकर्ता द्वारा उसके कार्यो के प्रति जिम्मेदारी की अभिव्यक्ति है।

प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु डॉ. शशिकांत त्रिपाठी तथा कल्पलता पांडे द्वारा निर्मित शिक्षक दायित्वबोध प्रमापनी– को उत्तरदायिता मापन का आधार बनाया गया है। इसके आधार पर उत्तरदायिता के चार आयाम निम्नलिखित है :–

अ. विद्यार्थियों के प्रति

ब. अभिभावकों के प्रति

स. विद्यालय के प्रति

द. समाज के प्रति

प्रयुक्त चर :–

अ. स्वतंत्र चर :– प्रस्तुत शोध में विद्यालय, लिंगभेद स्वतंत्र चर है।

ब. आश्रित चर :– प्रस्तुत शोध में शिक्षक उत्तरदायिता को आश्रित चर के रूप में लिया गया है।

शोध विधि :– निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु इस शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श एवं न्यादर्शन :– प्रस्तुत शोध यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग करते हुए चयनित न्यादर्श वितरण निम्नांकित है :–

न्यादर्श :–

राज्य – राजस्थान	
जिला– जयपुर	
पुरूष शिक्षक	**300**
महिला शिक्षक	**300**

प्रदत्तों की प्रकृति :–

प्रदत्तों की प्रकृति मात्रात्मक हैं।

प्रदत्त विश्लेषण प्रक्रिया :–

प्रदत्तों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण द्वारा किया गया हैं।

तालिका –1

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों के उत्तरदायित्व पर सांख्यिकी :–

आयाम	लिंग	शिक्षक संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर	परिकल्पना सत्यापन
अ.	पुरूष	300	12.87	3.39	10.41	0.01	अस्वीकृत
	महिला	300	10.19	2.90			
ब.	पुरूष	300	12.00	3.19	10.53	0.04	अस्वीकृत
	महिला	300	9.42	2.79			
स.	पुरूष	300	11.41	3.20	10.33	0.01	अस्वीकृत
	महिला	300	8.68	3.27			
द.	पुरूष	300	10.13	3.34	9.42	0.01	अस्वीकृत
	महिला	300	7.63	3.16			

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

परिकल्पना सत्यता का आधार 0.01 तथा 0.05 पर तालिका मूल्य के आधार पर किया गया है।

उपरोक्त तालिका पर दृष्टि डालने पर हमें निष्कर्षतः यह देखने को मिला कि शिक्षक दायित्वबोध के चारों आयामों पर महिला एवं पुरूष शिक्षकों में अंतर पाया गया। अतः निर्धारित परिकल्पनाएं अस्वीकृत होती है।

1. आयाम (अ) के प्रदत्त यह इंगित करते है कि पुरूष शिक्षकों के मध्यमान महिला शिक्षकों की तुलना में कही अधिक है। यह इस तथ्य को स्पष्ट करते है कि महिला शिक्षकों की तुलना में पुरूष शिक्षकों में विद्यार्थियों के प्रति उत्तरदायित्व अधिक पाया जाता है।

2..आयाम (ब) के प्रदत्तों पर दृष्टिगत करने से स्पष्ट हो जाता है कि महिला शिक्षकों का मध्यमान पुरूष शिक्षकों की तुलना में कम हैं, यह इस बात का द्योतक है कि अभिभावकों के प्रति दायित्व की भावना पुरूष शिक्षकों में अधिक पायी जाती है।

3. आयाम (स) के प्रदत्तों यह दर्षाते है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों के मध्यमानों में पर्याप्त अंतर है। यह मध्यमान पुरूष शिक्षकों का अधिक हैं, जो इस तथ्य को स्पष्ट करते है कि विद्यालय के प्रति उत्तरदायिता निभाने में पुरूष शिक्षक महिला शिक्षकों से कही आगे हैं।

4. आयाम (द) के प्रदत्तों पर दृष्टि डालने से यह स्पष्ट हो जाता है कि महिला एवं पुरूष शिक्षकों के मध्यमान पर्याप्त अंतर लिए हुए है जो इस तथ्य को स्पष्ट करते है कि महिला शिक्षकों की तुलना में पुरूष शिक्षकों में समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना अधिक पायी जाती है।

शैक्षिक फलितार्थ :–

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षो के आधार पर शिक्षा के क्षेत्र में न्यूनाधिक परिवर्तन लाने का प्रयास किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध के परिणाम यह दर्शाते है कि पुरूष शिक्षकों में महिला शिक्षकों की तुलना में प्रत्येक आयामों एवं क्षेत्रों में उत्तरदायिता की भावना अधिक पायी जाती है। यद्यपि इसके अनेक कारण हो सकते है कि महिला शिक्षकों पर पारिवारिक दायित्वों का अधिक होना, सामाजिक परिवेश की बाद्धता या शारीरिक अक्षमता के कुछ क्षेत्र भी। इन व्यक्तिगत परेशानियों को दरकिनार करते हुए महिला शिक्षिकाओं में उत्तरदायित्व की भावना बढाने के प्रयास किए जा सकेगें जिससे कि शिक्षण व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाया जा सकें।

शोध की परिसीमाएं :–

अ. प्रस्तुत शोध में जयपुर शहर के विद्यालयों का ही चयन किया गया है।

ब. उच्च माध्यमिक स्तर (11 एवं 12) को अध्यापन कराने वाले शिक्षकों का चयन किया गया है।

स. विज्ञान, वाणिज्य, एवं कला संकाय के शिक्षकों का चयन शोध हेतु किया गया है।

द. हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों माध्यम के विद्यालयों का चयन किया गया है।

स. शिक्षकों का चयन सहशैक्षिक तथा समलिगीय दोनों प्रकार के विद्यालयों से किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. एंग्लीहार्ट, एम.डी. (1972), मेथड्स ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, रैंड मेक्नली एंड क., शिकागों।
2. चतुर्वेदी, विराट विष्णु (1988), शिक्षक की जवाबदेही साहित्य परिचय सामयिक विशेषांक, आगरा।
3. इन्वाजामीर, एम. (1988): एकाउंटिबिलिटी इन टीचर एजुकेशन, दी इण्डियन जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन।
4. कपिल, एच.के. (2004) अनुसंधान विधियाँ, वेदांत प्रकाशन, लखनऊ